भगावत् कृपा

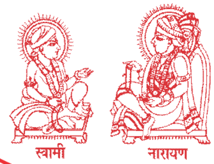

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-17, अंक-1 बुधवार, 26.1.94	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी जनवरी-1994	वार्षिक चन्दा-30.00 प्रति अंक : 3.00

आओ ! आओ ! दिल्ली मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा करके अमृतनिधि परम पूज्य काकाजी का अमृत महोत्सव मनायें........

जिस मंगलकारी दिन की सब खूब समय से राह देख रहे थे....दिल्ली के नवनिर्मित मंदिर में भगवान स्वामिनारायण की मूर्तिप्रतिष्ठा-यानि 1984 में गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज द्वारा किए गए संकल्प के साकार होने का दिन....और उनके संकल्प को अध्धर झेलने, स्वयं को याहोम करने वाले हमारे प्यारे प्रभु-प्राणाधार परम पूज्य काकाजी का अमृत पर्व....उसे परम पूज्य काकाजी के ही 'साक्षात्कार दिन' के शुभ दिन पर सर्व प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में अब दिल्ली में मनायेंगे....सर्वप्रथम तो इस त्रिवेणी संगम पर मित्र-मंडल सहित आकर दर्शन, सेवा, समागम का अनुपम लाभ लेने व दिव्यानंद लूटने का आप सभी को हमारा हार्दिक निमन्त्रण.....

गुरुहरि परम पूज्य काकाजी के विरल व्यक्तित्व के बारे में क्या लिखना? एक बार भी जिसने उस विभूति का सानिध्य पाया, वह जीवन की आखिरी सांस तक उन्हें भूला नहीं पायेगा...सच ! परम पूज्य काकाजी-गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज ने अपनी कल्याण योजना के लिए पसंद किया **'केसरी सिंह'**.....स्वयं का अस्तित्व मिटाकर सदैव औरों के जीवन को रोशनी देता हुआ गुणातीत समाज का अनोखा चमकता सूर्य.....

जिस दिन से परम पूज्य काकाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज के हृदयगत अभिप्राय को पहचाना.... उस दिन से उनके जीवन में गुरुहरि योगीजी महाराज और उनके संबंध वालों के सिवा कुछ प्यारा नहीं रहा..... अक्षरधाम से ही गुरुहरि योगीजी महाराज जो योजना लेकर आए थे उसमें परम पूज्य काकाजी सम्पूर्ण रूप से याहोम हो गए....अरे ! परम पूज्य काकाजी तो समाज में आमूल परिवर्तन की घटना करने वाले बड़े क्रांतिवीर थे और इसीलिए अपने गुरु की हर प्रकार से शान बढ़ाने कलंकित प्रसिद्धि को भी स्वीकार किया.... वर्तमान युग की मांग को देखते हुए गुरुहरि योगीजी महाराज के अन्तर की इच्छा थी कि पढ़े-लिखे युवकों को साधु बनाना है। अपने गुरु के इस अभिप्राय को साकार करने पूज्य काकाजी खुले

मैदान में गालियाँ खाने कूदे.....नये युग के रंगों से रंगे युवकों को अपनी तेजस्वी प्रतिभा व बुद्धि से प्रभु के अस्तित्व व आवश्यकता का एक नया 'दर्शन' दिया और निर्व्याज प्रेम से लाड़-लड़ाकर भगवान के रास्ते मोड़ा। फलस्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज ने पहली बार पढ़े-लिखे 51 युवकों को दीक्षा देकर साधु बनाया। फिर, गुरुहरि योगीजी महाराज का एक अन्य संकल्प कि बहनों को भगवान भजने की व्यवस्था करनी है, मौका देना है....उसके लिए अनेकों कलंक अपने पाक चरित्र पर लिए....अपने गुरु के लिए कुर्बान होने सिर पर कफन बांध कर निकले! इस प्रकार एक सुगम मार्ग प्रशस्त किया.....पूज्य ज्योति बहन जिन्होंने सर्वप्रथम बहनों के भगवान भजने में सहयोग दिया, उन्हीं के शब्दों में–**'सचमुच हमारे लिए पूज्य काकाजी ने साहस झेलकर रॉयल रोड तैयार कर दिया। सो ही आज हम यहाँ बैठे हैं, वर्ना आज हम यहां होते ही नहीं।'**

यूं इनकी परम सच्चाई के आगे परिस्थितियों को हारना पड़ा.....समाज को उनके कार्य के आगे नतमस्तक होना ही पड़ा.....और भगवान भजने के मार्ग में जड़ जैसों को अपना करके परम पूज्य काकाजी ने निभाया और हरेक का व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक उत्थान करने जीवन की आखिरी सांस तक तत्पर रहे....सच! वह चैतन्यशिल्पी तो नवीन सत्य देने वाला ऐसा क्रान्तिकारी पुरुष था कि आने वाली कई पीढ़ियाँ उसको आदर्श पुरुष मानने में गौरव मानेगी....

और.....परम पूज्य काकाजी ने गुणातीत समाज की चारों पुंखुडियां-संतों, बहनों, युवकों, गृहस्थों को पूर्ण पल्लवित करने एक माली की तरह पाला-पोसा....जीव के सच्चे राहबर बनकर हरेक के साथ अलग-अलग संबंध से-किसी के पिता बनकर, किसी के सखा बनकर, किसी के गुरु के रूप में अनंत गुनाह माफ करके केवल निर्दोषभाव और निरन्तर सुहृद प्रार्थना से सबको अपने जैसा बनाने अविरत छुपा परिश्रम किया....और किसी को आभासमात्र भी नहीं होने दिया कि **वे हमारे लिए इतना परिश्रम कर रहे हैं।** उन्होंने हरेक के पास उसका सुख रहने दिया....स्वयं ने सबको निर्दोष माना, सबकी भूलों के भागीदार बने...कोई हेत रखे या नहीं, कोई सेवा करे या नहीं कोई साथ दे या नहीं दे परन्तु परम पूज्य काकाजी ने निरपेक्ष प्रेम ही बहाया.....पल-पल के अपने वर्तन से आत्मीयता और सुहृद भाव, गुरुभक्ति व महिमा का साक्षात्कार कराया.....

गुरुहरि योगीजी महाराज का हर अल्प वचन भी परम पूज्य काकाजी ने अध्धर झेला......गुरुभक्ति, गुरुवाक्य का अजोड़ आदर्श उन्होंने हम सब के लिए रखा। परम पूज्य काकाजी की Agri Orient Industries का व्यापार खूब जोर-शोर से फैला था। पर, बापा ने प.भ. गुलजारीलाल नंदाजी के लिए चुनाव लड़ने वहां सांबरकांठा जाने की आज्ञा की....परम पूज्य काकाजी वहां गए और विजयी होकर लौटे। इसके फलस्वरूप ही अत्यंत राजी होकर बापा ने 3 फरवरी 1952 को 72 घंटे की समाधि कराके प्रभु का साक्षात्कार कराया.....और जब से गुरुहरि योगीजी महाराज में परम पूज्य काकाजी ने धाम की रसधनमूर्ति निहारी और पूज्य शास्त्रीजी महाराज व पूज्य योगीजी महाराज में रंचमात्र फर्क नहीं, यह अनुभूति करी तब से-

'बापा एक अच्छे साधु मात्र ही नहीं है, वे तो धाम का भव्य स्वरूप है।'

इस परमसत्य का उन्होंने सर्वप्रथम उद्‌घोष किया और फिर तो हरेक front पर आगे रहकर माया के सामने उन्होंने जंग खेली......परिणामस्वरूप आज गुणातीत समाज स्थापित हुआ है। यह सब हम खूब जानते हैं, समझते हैं और सभाओं में गाते

भी हैं। लेकिन हमने उनका सम्यक् और सम्पूर्ण स्वीकार नहीं करा !

ज्योत की बहनों के भजन की एक खूब मार्मिक कड़ी याद आती है-

'बोले या माने उसे दे झीरो मारक,

वर्ते या रूचि रखें उसे करे मूर्ति धारक।'

दूसरों द्वारा माने जाने के-पूजे जाने के और अलौकिक रमणीय विषयों के रागों में,

निजी महत्वाकांक्षाओं के प्रबल प्रवाहों में

और

साम्यावस्थारूप माया के घेरे में

हम भूल गए कि नारायण के असली स्वरूप का सम्यक् दर्शन तो उन्हें था और यह याद कराने जाहिर सभाओं में-शिविरों में बुरे बन कर भी वे बेहिचक कहते-'पप्पाजी, मेरे और स्वामिजी के सिवा तुम अंधे क्या बात करोगे? तुम्हें दर्शन है क्या? नारायण के असली स्वरूप का दर्शन तो मुझे है। **साक्षात्कारवाला पुरुष हूँ मैं।'**

क्या वे नहीं समझते थे कि उनके यूं बोलने पर हम उनका क्या मूल्यांकन करते थे?

पर उस मोड़ पर लाल बत्ती दिखाने वे कहते भी थे-**'अहम् का विसर्जन करा हुआ पुरुष ही यह बात कर सकता है।'** सच ! डंके की चोट पर यह बात वही कह सकता है जिसने हकीकत में साक्षात्कार किया हो। श्री रामकृष्ण परमहंसदेव का कथन यहाँ सार्थक होता है-**'असल में परमेश्वर का साक्षात्कार करके आदेश प्राप्त किए हुए पुरुष ही यथार्थ में धर्मप्रचार के योग्य होते हैं, दूसरे लोग तो अपनी-अपनी डफली बजाने वाले केवल नाममात्र के प्रचारक होते हैं'।**

और इससे भी अधिक उन्होंने वह 'प्राप्ति' केवल स्वयं के लिए नहीं रखी, बल्कि गुरुहरि योगीजी महाराज के पास उसी पल अन्तर से याचना की कि अक्षरधाम के परम सुख, शान्ति, आनंद की जो अनुभूति मुझे कराई है, वही अनुभूति मेरे संबंध में आये व आने वाले हरेक को हो....और इस तरह बापा (गुरुहरि योगीजी महाराज) ने अपना वारसा परम पूज्य काकाजी को सौंपा।

उसी प्रकार परम पूज्य काकाजी ने जैसे ही उत्तर भारत में भगवान स्वामिनारायण का संदेश फैलाने की बापा की मर्जी देखी, तो उस संकल्प को साकार करने लग पड़े; जबकि उस समय स्थूल रूप से उनका बापा से कोई संबंध भी नहीं था.......सानुकूल संजोग भी नहीं थे.......दिल्ली में तो स्वामिनारायण धर्म का नाम तक कोई नहीं जानता था.....संतों को दिल्ली में आकर कहाँ रहना? वह भी एक प्रश्न था। इन विपरीत परिस्थितियों को गिने बिना उस शूरवीर योद्धा ने जैसे अंधेरे में छलांग लगाई.....और इसमें निमित्त बनाने-अपनी प्रसन्नता लुटाने **'गुरुजी'** को दिल्ली के नए कार्यक्षेत्र का बगीचा सौंपा व कहा कि **'यह तुम्हें मैं नहीं भेज रहा, बापा का संकल्प है और वह हमें फैलाना है।'** परम पूज्य काकाजी की आज्ञा से बिना कुछ दिमाग लगाए संतमंडल दिल्ली-'भारत साधु समाज' में रहने आया.....

परम पूज्य काकाजी भी सर्दी-गर्मी, दिन रात देखे बिना बार-बार दिल्ली आते....वे स्वयं रिक्शा में घूमें, ट्रेन में सफर किया....पैसों की खूब तंगी होते हुए भी संतमंडल को कभी कमी महसूस नहीं होने दी। कई बार तो सब की राय यह भी आई कि दिल्ली में सत्संग का कुछ development तो हो नहीं रहा, तो क्यों centre का फिजूल खर्चा ढोना? इस तरह अनेक प्रकार की बाधायें आयी....पर, परम पूज्य काकाजी शूरवीरता से अकेले हाथ लड़े....एकदम वचननिष्ठ व दृढ़प्रतिज्ञ ! क्योंकि एक ओर अपने गुरु का संकल्प था व दूसरी ओर उन्हें एक स्पष्ट vision....

कुछ भी ध्यान में लिए बिना वे लगे ही रहे......लगे ही रहे........परम पूज्य काकाजी की

बलभरी कथावार्ता व परिश्रम से संतमंडल ने अनेक टीका चर्चाओं के बावजूद अपनी निगाह एकमात्र उनके वचन की ओर रखी और उसमें मिट जाने में अपने जीवन की सार्थकता मानी.....और अपने गुरु के अभिप्राय की भक्ति में सुरुचि से लग पड़ा।

फलस्वरूप आज दिल्ली में गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज का मंदिर बनाने का 'ब्रह्मसंकल्प' साकार हो उठा.......परम पूज्य काकाजी ने इस बगीचे को अपने खून से सींचा.....इसकी नींव की ईंट में स्वयं को दबाकर हमारे लिए 'राजमार्ग' तैयार किया। दिल्ली में आत्मबुद्धि व प्रीति का एक नूतन समाज तैयार करना-उनका स्वप्न था और इसी सिद्धान्त पर व परम पूज्य काकाजी के 'सर्वदेशीयता' के मंत्र को सिद्ध-साकार करने आज दिल्ली केन्द्र निरन्तर अग्रसर है। सर्व गुणातीत स्वरूपों के प्रति एक सरीखा ही पूज्यभाव ! करोड़ों धन्यवाद उस अनोखे चैतन्यशिल्पी को व उनके द्वारा तैयार, उनके वचन में याहोम हो जाने वाले संतमंडल को। गुरुनिष्ठा और गुरुभक्ति का अनुपम आदर्श रूप बना यह मंदिर युगों-युगों तक परम पूज्य काकाजी का अनथक् परिश्रम याद दिलाता रहेगा।

परम पूज्य काकाजी ने न देखे किसी के दोष, न देखी किसी की भूल, न देखा किसी का ज्ञान-अज्ञान.....न देखे किसी के गुण-अवगुण.......उन्होंने तो एक ही देखा.....शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज के संबंध वालों की सेवा कहां से? और.....जो भी थोड़ा बहुत उनके ढंग से जीने लग पड़ता.....परम पूज्य काकाजी तुरन्त कहने लगते यह तो मेरा फेफड़ा है.....यूं उन्होंने कईयों को कहा.....और तब फिर हमारा मायिक मन संशय करता था कि ये तो जो भी थोड़ा उनके ढंग से चलने लगता है, उन्हें फेफड़ा कह देने लगते है। और.....हम मज़ाक में परम पूज्य काकाजी से पूछते भी कि 'कितने फेफड़े है आपके या कितने फेंफड़े बदले आपने'? परन्तु यह भी हमारा उनके प्रति मायिकभाव ही था ! यहाँ गुरुहरि योगीजी महाराज का एक प्रसंग निहारे। एक बार गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.भ. गुलजारीनंदाजी के आने पर उन्हें अपने कई हरिभक्तों का परिचय कराया और हर एक का परिचय 'हमारे प्रमुख-हमारे कर्ता-धर्ता-यहाँ के सर्वेसर्वा' कह कर कराया। तब किसी ने पूछा कि स्वामी ! आपके कितने प्रमुख ? गुरुहरि योगीजी महाराज तुरन्त रहस्मय भाषा में बोले—**'मैं तो हर एक को प्रमुख कह दूँ। पर जो काम करे वह प्रमुख'**......यह थी उनकी दृष्टि......पर हम तब समझे नहीं कि इन्होंने तो हरेक को मौका दिया.... यूं ही पूज्य काकाजी भी हरेक को मौका देते थे। और जिन्होंने उन्हें सम्यक्रूप से पहचाने-जैसे कि पूज्य दिनकरभाई हैं-उनके द्वारा आज परम पूज्य काकाजी के प्राण धरती पर धबकते है......बस ! हमने इनका मूल्यांकन करने में वह मौका खो दिया........

दूसरी ओर परम पूज्य काकाजी के कई तौर तरीके भी हमें ठीक भी नहीं लगते थे, इतना ही नहीं-गलत लगते थे। यूं लगता था कि वे चतुराई खेल जाते हैं-चालाकी से setting कर देते हैं। पर, वे सारे प्रपंच में इनकी कोई निजी महत्वाकांक्षा नहीं थी, सिर्फ एक ही भावना थी-कि मुक्तों प्रभु में रहते हो जाए, मुक्तों आपस में एक दिल से रहें। और इसीलिए किसी को कुछ, तो किसी को कुछ समझाते-करते हमने उन्हें देखे भी थे। लेकिन वह सारा सत्कर्म था......पर हमारी शापित बुद्धि वह सब मायिकभाव से निहारती थी। यहाँ पर सहज ही अर्जुन-सुधन्वा का प्रसंग याद आता है कि अर्जुन परबाण छोड़ते हुए सुधन्वा ने जब संकल्प करा-'हे

प्रभु ! जीवनभर केवल आपकी ही भक्ति करी हो और तनिक भी अन्य कोई व्यवहार न करा हो तो उस पुण्य के प्रताप से अर्जुन का मस्तक इस बाण से उड़ जाए'। तो सामने ही श्री कृष्ण प्रभु ने संकल्प करा **'जीवनभर कितने ही प्रकार का छल-कपट करके भी अगर भक्त के लिए किया वह सब परम सत्कर्म ही बना हो तो सुधन्वा का बाण चूर-चूर हो जाए।'** और ऐसा ही हुआ ! आज-कृष्ण सुधन्वा का प्रसंग हम गा पायेंगे। वही बात तो हमें परम पूज्य काकाजी में समझनी चाहिए थी कि परम पूज्य काकाजी जो भी करते थे वह भक्तों के पक्ष में-उनके परमहित के लिए सत्कर्मरूप ही करते थे। सच ! प्रकट के चरित्र में यह निहारना कठिन ही है।

सबसे अधिक हमें उनका व्यवहार भी कई बार अशुद्ध लगता था। पर इनको तो धाम-धामी और मुक्त ही सत्य थे। इन्हें ही सत्य मानकर वे जीये......इनकी नजर में बाकी सब मिथ्या थे....और प्रकृति-पुरुष तक का कुछ भी हो-वे इनमें कभी झूले नहीं। हाँ, मुक्तों को लाड़-लड़ाने जगत में से ला-लाकर उन्होंने मुक्तों को दिया....पर इस बात को भी हमने गलत लिया। उनके क्रियायोगों को अशुद्ध माना-जबकि हमें शुद्ध करने उन्होंने वह व्यवहार ग्रहण करा था। वच.ग.अंत्य.प्र. 14 में महाराज ने भी कहा है-**'ऐसे जो बड़े होते है वे बाह्यदृष्टि से वर्त कर कई जीवों को जड़भरत व शुकजी जैसे कर देते हैं। सो ऐसे अतिशय जो बड़े हों उनका व्यवहारिक दृष्टि से वर्तना, वह तो जीवों के ऊपर केवल दया के कारण ही है।'** दूसरों को भले हमने सिखाया कि ऐसे बड़े पुरुष जो करें वही धर्म है, उन्हें धर्म के मुताबिक रहना जरूरी नहीं है। पर हम यह नहीं समझे और.....परम पूज्य काकाजी के बाहरी व्यवहार को देखकर हम उनके बारे मन में गलत धारणा मान्यता, ग्रन्थि बांध लेते थे।

हम समझे नहीं कि-अपने निजी स्वार्थ के लिए, अपनी कीर्ति बढ़ाने-महत्वाकांक्षा को पोसने उन्होंने भक्तों को व सेवकों को कभी भींसे नहीं। हाँ, मुक्तों के संकल्प में वे जरूर भींसे गए.....पर, हमारी व्यवहारिक बुद्धि उन्हें नापती रही। उन्होंने किसी से कुछ भी लिया तो केवल 'योगी परिवार' के लिए ! और बदले में हरेक को अनंतगुणा दिया.....

कीर्ति, यश की कभी न तो उन्हें इच्छा थी न ही परवाह भी की....शिकागो में एक बार परम पूज्य काकाजी ने पूज्य महेन्द्र बापू को अपना अभिप्राय बताते हुए कहा था कि **'बापू, अमेरिका में लाखों लोग इकट्ठें होंवे, 200 मर्सीडीज गाड़ियाँ मुझे लेने आये और मेरे पीछे बड़े-बड़े जलूस निकलें, इसमें मुझे रस नहीं। यह भी मैं कर सकूँ ऐसा सामर्थ्य है। तूझे ख्याल नहीं कि तेरा दादू सोने की पालकी में घूमे ऐसा है। पर इन चीजों से विशेषता नहीं। इन सबसे अधिक सारे अमेरिका में पूज्य दिनकरभाई जैसे यदि पाँच तैयार हो जायेंगे, तो मैं मानूंगा कि सारे अमेरिका को सत्संग हो गया और पचास-सौ आत्मबुद्धि व प्रीति वाले कुटुंबों यदि तैयार हो जाएँ तो अपना target पूरा हुआ.....बाद में ये लोग कार्य करेंगे'**........इसी बात से परम पूज्य काकाजी का अभिप्राय स्पष्ट हो जाता है कि वे हमसे क्या कराना चाहते थे.......

और........26 जनवरी 1986 में जब परम पूज्य काकाजी का साक्षात्कार दिन विद्यानगर में मनाया तब परम पूज्य काकाजी स्पष्ट बोले थे कि- **'गुणातीत द्विशताब्दी का समैया बहुत अच्छा हुआ, पर मैं उसे अच्छा हुआ नहीं मानता। गुणातीत भावना वाला साधु बनो.......अब एक कलश तो चढ़ गया पर सुहृद्भाव के कलश चढ़ाना बाकी है........'** उनकी यह बात सेवकों का मनोबल तोड़ने या गिरा देने नहीं थी, बल्कि वैभव, झाकझमक, ऐश्वर्यों में हम न

फंसे.........इस भूल-भुलैया में उलझकर कहीं हम फंसे रहकर अपनी पूर्णाहुति मानकर हमारा असली निशान कहीं चूक न जायें-वह एक सत्य स्पष्ट कर देने का था। जैसा कि मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बातों में भी लिखा है कि **'चाहे सोने के मंदिर बनें, समैये खूब बड़े-बड़े हों.......समैये नहीं करना यह बात नहीं है, पर मूल बात कहीं गौण न हो जाए।'** सच, सही अर्थ में तो प्रेम परम पूज्य काकाजी का यह हमारे प्रति का अत्यधिक प्रेम व हम पर अनोखा अनुग्रह था।

परम पूज्य काकाजी का प्रगटीकरण अब भी जैसे वे स्थूलरूप में थे व अनुभव कराते थे वैसा ही है......अपना कोई भी कार्य उन्होंने छोड़ा नहीं है......हम सभी को परम पूज्य काकाजी की एक कार्य प्रणाली का ख्याल है-उन्हें जब भी कोई गहरे रहस्य की या आध्यात्मिक मार्ग की कोई अनोखी सूझ देनी होती थी तो वे एक ही बात को तीन-तीन बार दोहराते.......उसके पीछे उनकी एक ही भावना थी कि उनके कहे शब्द केवल हमारे ऊपरी सतह पर ही न रहें, बल्कि हमारे इन्द्रियाँ-अंतःकरण और जीव में उतर जाए........उनका शब्द लेकर हम जीने लग पड़े......

अभी दिल्ली मंदिर के बारे भी परम पूज्य काकाजी ने यही किया जो एक ऐतिहासिक घटना बन गई है। परम पूज्य काकाजी के अमृतपर्व व दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा बारे का message आज आपके पास तीसरी बार पहुँच रहा है.......पहले 3 Feb'93 को function करना निश्चित किया......फिर दूसरी बार 13th April' 93 को निश्चित किया और तब भी सारा कार्यक्रम नहीं हो पाया और अब तीसरी बार 3 Feb' 94 को दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा व परम पूज्य काकाजी का अमृतपर्व मनाने का आयोजन किया है........तो अब यह काम भी उन्होंने तीसरी बारी में ही कराया। यदि देखें तो यह सामान्य बात नहीं हो सकती.......अपने आप में ही यह सांकेतिक व हमें अनुभव कराने परम पूज्य काकाजी ने किया है। हमें कुछ समझाने यह घटना बनी है।

अब दिल्ली मंदिर में परम पूज्य काकाजी का अमृत महोत्सव मनायेंगे-स्थावर मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा भी होगी। सब गुणातीत स्वरूपों, मुक्तों पधारेंगे........ भक्ति अदा करने का यह मौका है ! सो खूब धूम-धाम से करना भी है, परन्तु यह सब करते हुए हम अपना निशान न चूकें......

निशान क्या........? परम पूज्य काकाजी को जो हमसे कराना था-वह खूब स्पष्ट बताकर ही गए है.....अब भी यदि हम अपने मन, बुद्धि, चित्त-अहंकार की भूमिका-मूल्यांकनों को छोड़ने को तैयार न हों तो हमारी कैसी जड़ता.......? वे बार-बार कहते थे **'दुनिया न माने, मानव न माने, तुम तो मानो'**-तो अब तो जाग्रत होवें......इससे भी अधिक परम पूज्य काकाजी हमेशा कहते कि **'जाओ अब तक के तुम्हारे दुःख मुझे दे दो-अब तक का सब माफ.......'** तो इस अमृतपर्व पर भी वे हम सब पर ये आशीर्वाद बरसायेंगे ही.....

हे काकाजी ! Four Points Programme आपको खूब पसन्द थे-आपकी बलभरी वह परावाणी अब भी कानों में गूँजकर जाग्रत करती हैं। कम-से-कम अब तो आपके द्वारा कई बार दोहराई इन चार बातों को जीवन का आधार बना कर चलने लग पड़े-

Four Points Programme:

1. सुबह का अपना निजी-Personal भजन अचूक कर ही लेना और प्रार्थना करना-हे प्रभु, हे गुणातीत स्वरूपों ! आप सारा दिन मेरे साथ रहना। हर क्रिया मैं आपको याद करके ही करूँ.... आप बार-बार यही

कहते थे कि **'शुभ-अशुभ क्रिया का प्रारम्भ भगवान के नाम का नमक डालकर ही करो।'**

2. रात को प्रायश्चित रूप प्रार्थना करके ही सोना; सारे दिन में प्रभु को भूलकर जो भी क्रिया करी हो उसकी माफी माँगकर, फिर वह गलती दोबारा दोहराया ना करें-इसलिए प्रायश्चित प्रार्थना करके ही सोना।

3. जो भी सेवा तुम्हें आती हो, वह तुम जहाँ भी हो, जिस मंडल में भी हो अहोभाव से-अच्छी से अच्छी तरह करने की भावना से रोज एक सत्कर्म के रूप में अवश्य करना।

4. स्वयं का स्वाध्याय-वचनामृत, स्वामी की बातों जैसी परावणी का वाचन आधा घंटा नियमित रूप से कर ही लेना.....परिणामस्वरूप रोज एक नई सूझ मिलेगी व मन की स्थिरता दृढ़ होगी।

हे काकाजी! आप कई बार कहते थे-'अरे! इतना करने में आपका क्या जाता है। ये 4 points programme दिल की सच्चाई व नित्य नवीन श्रद्धा से कर लो, तो आपको केवल सुख ही सुख......' तो, अब आपके दिखाये इस रास्ते पर वफादारी से चलकर आपकी शोभा बनें........

हे करुणानिधि काकाजी! हे प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों......

☆ प्रत्यक्ष स्वरूप की भक्ति करने में, उपासना के मूलभूत सिद्धान्तो-अक्षरपुरुषोत्तम स्वरूपों गौण न होंव-

☆ हमारी स्वरूपनिष्ठा दृढ़ कराना-

☆ हमें प्राप्ति की मस्ती अखंड रहे-

☆ हमें संबंध वालों का 'दास' बनाना-

☆ हमें आप जैसी स्वरूप की भक्ति से अधिक संबंध वालों की पराभक्ति करने की निराली सूझ देना-

☆ हमें झुकने, सरल होने, सहन करने की आदत डलवाना-

☆ आपका खूब आग्रह था कि दो भगवदी के साथ मैत्री करें........वह करने अमृतपर्व पर हम संकल्पनिष्ठ बनें-

☆ हमारा 'अहं'-'मैं' भाव मिटाकर माहात्म्य के महासागर में आनंद करते कर दो-

☆ स्वामिनारायण के संबंध वाले सिर के मुकुट मनाने विशाल हृदय का दान देना-

परम पूज्य काकाजी की परावाणी में हमने कई बार सुना था.....और प.पू. काकाजी को जो खूब पसंद था-वे बार-बार हमें आग्रहपूर्वक कहते थे कि **'पल-पल की तुम्हारी क्रिया बापा की यानि-जिसे तुम अपना ईष्ट मानते हो-जिस गुणातीत स्वरूप से तुम जुड़े हो-उसकी स्मृति करके उसकी अखंड हाजिरी मानकर ही करो। मेरी हर छोटी से छोटी क्रिया वे देख ही रहे हैं.......मेरा हर सैकण्ड का संकल्प भी उनकी नज़र से बाहर नहीं है। मेरी हर बात वे सुन रहे हैं। यहाँ तक कि तुम भी भजन करने बैठो तो भीतर में पक्का करके भजन करने बैठना कि मेरे प्रभु मेरे समक्ष मेरा भजन सुन ही रहे हैं.......हर पल अपने स्वरूप को ही अपने आसपास-अपने भीतर अखंड हाज़िर मानकर उसकी स्मृति करके करोगे तो आश्चर्यकारक फल मिलेगा।'**

तो, अब तो प.पू. काकाजी के इस वचन को लेकर वर्तने लग जाएँ और......प.पू. काकाजी के अमृतपर्व में हमारा रोम-रोम 'काकामय' बन जाये... साथ ही साथ जब प.पू. काकाजी के अमृतपर्व पर दिल्ली मंदिर में भी मूर्तिप्रतिष्ठा हो रही है तो हमारे भीतर में भी इस मूर्तिप्रतिष्ठा पर प्राणप्रतिष्ठा हो जाए ऐसी प्रार्थना।'

☆ ☆ ☆

'परम पूज्य काकाजी-मेरे लिए'............

(परम पूज्य काकाजी के अमृतपर्व निमित्त 'भगवत् कृपा' का यह विशेष अंक निकल रहा है, जिसमें उपरोक्त शीर्षक के अंतर्गत हमने कईओं की भावना व्यक्त की है। चूंकि परम पूज्य काकाजी के संबंध में आई हरेक व्यक्ति को उनका प्रेम मिला, आशीर्वाद मिले, प्रेरणा मिली। जीवन में परिवर्तन तो आया ही; लेकिन इन सब से अधिक जो भी उनके संबंध में आया उसको परम पूज्य काकाजी की अलग ही छवि मिली। किसी को पिता के रूप में, किसी को माँ, किसी को गुरू के रूप में तो किसी को सखा के रूप में ! जिसने उन्हें जैसी दृष्टि से निहारा.....उन्हें उनकी भावनाओं के मुताबिक वैसी ही प्रतीति कराई। आज भी उनकी मस्तीभरी चाल, उनकी अद्‌भुत प्रतिभा, उनकी बातें, उनके अनुभव, उनकी स्मृतियाँ हरेक के दिलों-दिमाग पर ऐसे छाई हैं मानो कल की ही बात हो.....आज भी वे स्मृतियाँ अनोखा बल देती हैं, सूझ देती है, मार्गदर्शन देती हैं और हमारे बीच उनके अभी भी वैसे ही प्रगट होने का साक्षात् अनुभव कराती हैं।

जैसे कि गुणातीत समाज के आत्मीय स्वजन परम भक्त मल्कानी साहब से तो आप सब परिचित हैं.....उन्होंने एक ही बार परम पूज्य काकाजी के दर्शन किए हैं। व अधिकतर अनिर्देश में बने परम पूज्य काकाजी के स्मृति स्थल पर परिक्रमा करने आते हैं। उन्होंने स्वयं पूज्य गुरुजी को बताया कि **स्मृतिस्थल पर परम पूज्य काकाजी उनकी बातों का जवाब देते हैं।**

यह कोई सामान्य व्यक्ति की बुद्धि के भ्रम की या कल्पना की बात नहीं। परम पूज्य काकाजी के ही शब्दों में कालीदास के 'मेघदूत' के बादलों की गप्पें नहीं, साक्षात् अनुभव करी बात है। खूब बुद्धिशाली व हर क्षेत्र में पहुँचे Industrialist की बात है।

सो इस विशेष अंक में उन सभी प्रतीतियों का व परम पूज्य काकाजी हरेक को किस विशेषता से स्पर्श कर गए.....उनका वर्णन है ताकि वे सब अपने आनंद का विस्तार कर आपको परम पूज्य काकाजी से अधिक से अधिक परिचित कराने की सेवा कर लें।)

Moscow
Wednesday
8th Dec. 93

"JAY SWAMINARAYAN"

This day, early morning over the telephone H.D. Guruji suggested that I write a few words about. H.D. Kakaji Maharaj.

My inital reaction was somewhat luke warm to the idea of writing about H.D. Kakaji Maharaj, as I had seen him only once and know about him only through the discourses of swaroops. As the day progressed my thoughts gradually dwelled on the mercy and grace shown to me by the ever present H.D. Kakaji Maharaj-giving me the association grace and unhindered free flowing guidance of swaroops-H.D. Pappaji-H.D. Swamiji-H.D. Sahib-H.D. Guruji and others.

What is it that H.D. Kakaji Maharaj mainly tried to teach us and imprint on our conciousness? I am putting down a few thoughts of His as per my own understanding of His teachings-

1. It is our duty to extend the same love and affection to a satangi as we have for our own kith and kin.

2. If we have to bend and kneel for the sake

of maintaining unity-amity-harmony-then we must do so. Believe me, He says. "It is a super devotion to the Lord."

3. Welcome with a smile, all situations, good or bad, that is the Gunatit way.
4. Do know the Lord as the supreme power. See him work in every event as the all doer that is our total surrender to Him.
5. Prayer with clear conscience and an outburst from the inner most core of the heart never remains unheard by the Lord.
6. Do not be a judge of anyone's actions or his fate-try to be friendly and you will be graced by the Lord.
7. You have attained the supreme state if you have accepted every event as oriented by the Lord and as such serve the Gunatit swaroop as His sincere devotee.

The most important of his teachings.

"That we have the gunatit swaroop with us is the end and perfection of our sadhana".

Jay Swaminarayan
With profound regards to all swaroops.

Indru Malkani
Delhi

☆ ☆ ☆

गुणातीत समाज बनाने, किया सब कुर्बान..... अनिर्देश के सौदागर, न भूलें तेरा बलिदान......

प.पू. काकाजी ! अहोहो ! धरती का मंगल...... अक्षरधाम से केवल करुणा करके हम सब के लिए मानवदेह धारण करके प्रगट हुई 'करुणामयी माँ'। निरपेक्ष, नितान्त, निःस्वार्थ प्रेम की जीवंत मंगल हितकारी, आनन्दघन मूर्ति !

हम सब खूब भाग्यशाली हैं कि प.पू. काकाजी जैसी दिव्य विभूति सामने से गरजु बनकर हमारे जीवन में आई। हमारी पात्रता-कुपात्रता देखे बिना अपनी गोद में बिठाकर प्रभु के पनौते पुत्र बनाने की जिम्मेदारी हमारे बिना कहे अपने सिर ले ली। हमारे सूक्ष्म तंत्र का शुद्धिकरण करके मुफ्त में मौजरूप अक्षरधाम का सुख, शांति, आनन्द देने का संकल्प उन्होंने किया.....उनका, ऋण तो कहाँ चुका पायेंगे?

जिस-जिस ने भी उस आनंदकारी मूर्ति की गरिमा का जाने-अनजाने भी अनुभव किया है, दर्शन किया है, स्पर्श किया है, ब्रह्मनाद सुना है......वह कभी भी उन्हें भूल नहीं पायेगा.....और सर्वप्रथम तो करोड़ों धन्यवाद पू. गुरुजी को-क्योंकि उन्होंने ही प.पू. काकाजी की महिमा मुझे समझाई.....

''गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागुं पाय, बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो मिलाय''

असल में प.पू. काकाजी का इतना सहज स्वाभाविक जीवन, हमारी ही कक्षा पर आकर वर्तन था कि प.पू. काकाजी मानव स्वरूप में भगवान रखी विभूति हैं उसका ख्याल आना खूब मुश्किल था....पर पहली नज़र में ही उनकी करुणामयी, निर्मिनेष दृष्टि, मुख पर निराली मस्ती मुझे भीतर तक छू गई, आत्मा के सच्चे राहबर मिलने से जीवन धन्य हो गया.....और प.पू. काकाजी ने पहली बार ही मुझे जब देखा तो पू. गुरुजी को बोले-**'मुकुंद यह लड़की गढ़डा से आई है.....महाराज के समय की है....... इसका तेरे साथ पहले का संबंध हैं।'** साक्षात् गुणातीत स्वरूप के सिवा किसी भी चेतना के बारे इतनी authentically ऐसी बात कौन कह सकता है ? हमारे पिछले जन्मों को हथेली पर पानी की बूँद की तरह देख पाये-ऐसे आर्षदृष्टा पुरुष.......!

भगवान राम के बारे में मैंने सुना था कि उन्होंने पत्थर बनी अहिल्या को पाँव से स्पर्श किया तो उसका

उद्धार हुआ। पर मेरे जीवन में तो प.पू. काकाजी ने खुली आँखों मेरे प्रारब्ध बदले....

मेरे घर में मेरे भगवान भजने बारे बहुत विरोध था.....प.पू. काकाजी को मैंने एक बार पूछा भी कि 'काकाजी आप मुझे नहीं मिले थे तब भी मेरे जीवन में दुःख था और अब आपके मिलने के बाद भी.....' तो प.पू. काकाजी बोले कि-'तुझे सही-सही बताऊँ या गोल-गोल।' मैंने कहा कि सही-सही बताइये। तो प.पू. काकाजी बोले कि-'**तुम्हारे माता-पिता से गुड्डी तुम्हारा पूर्व का लेन देन है, इस जन्म में तुम्हें मेरा सम्बन्ध हुआ है, तो इसी जन्म में जल्दी पूरा हो जायेगा, नहीं तो बार-बार जन्म लेना व भोगना.....**' ज्यादा तो मैं समझ नहीं पाई। पर प.पू. काकाजी, पू. गुरुजी के रूप में कुछ अनमोन प्राप्ति हुई है तो बस इसी जीवन में पूरा करा लेने का प्रभु का, होकर जीने का संकल्प किया। तीन चार साल अत्यधिक विरोध में घर में रहना पड़ा.....एक दिन प.पू. काकाजी मेरे पूर्वाश्रम के father की तबियत देखने मेरे घर आए.......Father उस दिन खूब मेरे against में बोले.......पू. काकाजी ने सारी बातें सुनी, मेरे भीतर का क्रन्दन सुना, फिर मेरे घर का पानी भी पिए बिना बाहर निकले और मुझे पीछे-पीछे मंदिर आने कहा। मुझे पू. काकाजी के प्रोग्राम बारे मालूम था कि मेरे घर से सीधा उन्हें नन्दाजी के यहाँ जाना था, पर उन्होंने अपना सारा प्रोग्राम cancle कर दिया..... प.पू. काकाजी मंदिर पहुँचे और थोड़ी देर बाद मैं पहुँची...... ए-103 (पुराना मंदिर) में प.पू. काकाजी ठाकुरजी के समक्ष खड़े रहे.....वहाँ बहुत सारे गुलाब के फूल पड़े थे....वे सारे फूल इकट्ठे करे मुझे चुन्नी की झोली जैसा बनाने कहा.......सारे फूल मेरी झोली में डालते हुए बोले-'**आज से तेरे सारे प्रारब्ध खत्म......लेन देन पूरा हो गया, गुड्डी, अब तेरा सब कुछ मेरे सर पर, तेरी सारी जिम्मा मेरी है........**' वह पल मानो मेरे लिए मंगलकारी बन गई। उस समय का प.पू. काकाजी आध्यात्मिक प्रकाशमय अलौकिक मुखारविंद.....अभी भी वह दृश्य याद करके आँखों में पानी आ जाता है कि ओहो ! ऐसे बेमतलब हमारे प्रारब्ध और प्रकृति का ढ़ेर अपने सर पर ले कर हमें सुखी करने वाले-बिना कोई कारण करुणा बरसाने वाले कहाँ मिलेंगे? और उस दिन से थोड़े दिनों बाद मैंने भगवान भजने के लिए घर छोड़ दिया और तब फिर घरवालों की ओर से भी कोई परेशानी नहीं हुई। साकार ब्रह्म की परावाणी कभी विफल जा सकती है क्या? इनका ऋण कैसे भूला पाऊँगी.......बस एक ही प्रार्थना निकला करती है कि हे काकाजी ! आपने जिस रास्ते अनुग्रह करके चलाया है.......उस रास्ते में आपकी मूर्ति के सिवा सात जड़ ईश्वर कोटि की भूमिकाएँ-रिद्धि-सिद्धि ऐश्वर्य की कोई भूभिका पर कभी पूर्णता न मानूं। दासभाव कभी भी चुकूँ नहीं।

प.पू. काकाजी का जितना उपकार मानें उतना कम है....कि उन्होंने पू. गुरुजी जैसे निर्मल पवित्र संत की गोद में बिठा दिया है....अपनी निराल ढब से प.पू. काकाजी ने कई मूलभूत रहस्य कृपा करके बीजरूप मेरे दिमाग में डाल दिए है, जो मुझे आज मेरी साधना में मददरूप हो रहे हैं। 1979 में एक बार प.पू. काकाजी ने पुराने मंदिर (ए-103) के Hall में सभा कर रहे थे.....मेरी सत्संग में नई-नई ही entry थी। प.पू. काकाजी की बात मुझे ज्यादा समझ में नहीं आती थी.......पर प.पू. काकाजी एकदम बोले-'**गुड्डी ! यह मुकुंद को ऐसा-वैसा साधु नहीं समझना, वह मेरा लड़का है। स्त्री-पुरुष के भाव से पर है.......अरे ! पैरिस की beauty Queens, इंद्रलोक की अप्सरायें भी उसके सामने खड़ी हो तब भी उसे विचार मात्र भी प्रसार नहीं होगा। वह खूब छुपा रहता है, मैं उसका guaranter हूँ।**' उस समय की प.पू. काकाजी द्वारा कही बात आज 14 साल से मैं अनुभव कर रही हूँ। आज अक्षरज्योति की बहनें व कई गृहस्थ बहनें पू. गुरुजी के साथ एक पवित्रता के रिश्ते से जुड़ी हैं। सभी

को अपनी स्वअनुभूति है कि पू. गुरुजी की आँखों की एक पवित्र, निर्दोष, निरपेक्ष करुणा वाली दृष्टि 'वृत्तियों' को दिव्यता में पलटाकर निर्गुण भूमिका की ओर ले जा रही है..... करोड़ों धन्यवाद प.पू. काकाजी जैसे 'गुरू' को और उनके द्वारा तैयार किए इस अनुपम शिष्य-पात्र को.......

प.पू. काकाजी की हमारे प्रति कितनी प्रीति, आत्मीयता-वह सोच कर विचार व बुद्धि विराम को पाती है...आँखों में पानी आ जाता है......प्रीति तो उस आत्मीयता के सम्राट से हमें करनी थी, इसके बजाय कितने नीचे उतरकर उन्होंने हमसे की और हमें ऊपर उठाये वह इन प्रसंगों से पता चलता है.....

1985 अप्रैल महीने में हमें आनंद कराने प.पू. काकाजी हरिद्वार-ऋषिकेश अपने साथ ले गए थे। प.पू. काकाजी से मिलने 'गीता-भवन' के महंतश्री आने वाले थे सो प.पू. काकाजी गीता भवन में ही रूक गए......दोपहर को खाने का समय हुआ था। प.पू. काकाजी ऋषिकेश के 'गीता-भवन' से लगभग साढ़े तीन किलोमीटर पैदल चलकर दोपहर की तपती धूप में अपने हाथों में खाने की थालियाँ लेकर हमारे पास पहुँचे और बोले **'लो, मैं तुम लोगों के लिए खाना ले आया हूँ, जल्दी खा लो, भूख लगी होगी।'** हम लोग तो प.पू. काकाजी के पसीने वाली लथपथ मुख को कर्तव्यविमूढ़ होकर देखते ही रहे.... देखते ही रहे.....उसल में तो 'गुलाम' सेवक तो वे बने न कि हम.......कोटि-कोटि वंदन उस चैतन्य जननी के छुपे श्रम को.......

ऐसा ही दूसरा प्रसंग निहारें-

1983 दिसम्बर की कड़कड़ाती सर्दी में सुबह चार बजे 65 साल की age में खुली जीप में प.पू. काकाजी पंजाब गए......यह याद करके अब महसूस होता है कि प्रीति तो वास्तव में उन्होंने हम से की थी कि इतना परिश्रम कर, स्वयं गरजु बनकर हमें प्रभु का संबंध देना चाहते थे औ तब भी हम? कैसे ऋण चुका पायेंगे उस अजोड़ धीरज रखने वाले चैतन्यशिल्पी का? आपने तो 'माँ' की तरह हमारी परवरिश करने में कोई कसर नहीं रखी।

प.पू. काकाजी का हमारे प्रति प्रेम का अन्य स्वरूप कि उन्होंने जिस-जिस को अपना माना, उसे कभी अहम्, मान की गुदगुदी के झूले में झूलने नहीं दिया-जिसे मैंने अपने जीवन में स्वयं प्रसंगों से अनुभव किया है-

एक बार मैंने पूरी रात जागकर प.पू. काकाजी का काम किया........सुबह बहुत खुश होती हुई मैं वह काम लेकर प.पू. काकाजी के पास पहुँची, तो हाथ में paper पकड़ते हुए प.पू. काकाजी एकदम बोले कि **'क्या सबको दिखाना है कि ओहो ! मैं तो प.पू. काकाजी की personal हूँ और कितना काम करती हूँ ?'** मैं दो मिनट तक प.पू. काकाजी की ओर देखती रही-एकदम अहम् पर चोट लग गई; लेकिन तुरंत अंतदृष्टि हुई कि मेरे सूक्ष्म अहम् को कृपा करके उन्होंने दर्शन करा के तोड़ा है। यह उनका कैसा मेरे प्रति प्रेम ?

इससे भी अधिक-मेरे personal सेवकों Top कक्षा पर जीयें......यह उनकी चाहना थी कि स्वभावरूपी पीली छाँट भी हम में न रहे।

एक बहन के साथ सम्बन्ध के कारण मेरी कुछ अनबन हो गई थी। मैंने तब सोच लिया था कि प.पू. काकाजी आयेंगे तो मैं सारी बात उन्हें करूँगी। प.पू. काकाजी जब आए और उनसे मिलने पर मैंने जैसे ही थोड़ी बात इस बारे छेड़ी.......आज भी वह दृश्य मेरे सामने.....प.पू. काकाजी की वह मूर्ति........ एकदम चाय की प्लेट नीचे रखते हुए बोले-**'शब्दातीत किसे होना है? शब्द से परे तुम्हें जाना है या उसे? साधना करने आई हो या वह?'**

इस बात से लगता है कि जिन्होंने भी उन्हें नजदीक से निहारा होगा या कभी कुछ उनके पास अलगता या भेदभाव की बात करने गए होंगे-फिर वह स्वरूपों से

संबंधित हो या अल्प संबंध वाले मुक्तों से-उन पर तब जो डाँट या कथावार्ता की बारिश हुई होगी कि उस सेवक के दिल से किसी भक्त या स्वरूप के प्रति भेदभाव की भी बात सदैव के लिए निकल ही गई होगी।

सच ! प.पू. काकाजी तो जीवमात्र के सच्चे सुहृद् बनकर उसे सहायरूप होने सदैव तत्पर रहे, कभी थके नहीं। भक्तों के दुखों को टालने, उन्हें बाहरी व आत्मिक रूप से सुखी करने की एकमात्र निःस्वार्थ परोपकार की ही भावना......मेरे बारे सब क्या सोचेंगे-यह विचारा ही नहीं। हरेक के लिए बेआबरू बने..... अरे ! किसी को आभासमात्र भी नहीं होने दिया कि-'मैं तेरे लिए इतना परिश्रम कर रहा हूँ'.... विचार से परे......केवल एक संबंध......यहाँ तक कि निजी सेवक भी कई बार उनकी बाहरी क्रिया को समझ पाने के कारण मनुष्यभाव, मायिकभाव में फंस जाते व उनकी उपेक्षा भी कर देते, पर वे महायोगी बिना भावफेर किये-अपने संकल्प से तनिक भी विचलित न हुए। अपने गुरु के प्रति एकमात्र भक्ति अदा करने हरेक का परम सुहृद् सखा, मित्र बनकर अविरत अःस्खलित धोध में लीन कराते ही रहे। हमारा बचपना, नादानियाँ कहो या लापरवाही निभाते ही रहे। कैसे समुद्र से भी अत्यधिक विशाल हृदय.....सौहृाद व उदात्त भावना.....

वे जब स्थूलरूप से हमारे बीच थे तब हम सबको 'गुणातीतभाव' में सहज रहने की सरल रीतें बताते ही रहे....। सुबह छः बजे से-हाथ में शेविंग मशीन लेते ही बातें करने की जो शुरुआत करते.....रात को ग्यारह......साढ़े ग्यारह बजे तक। बिना विश्राम किए लगातार उनकी 'स्वामिनारायण महामंत्र' का ब्रह्मनाद, ध्यान, वचनामृत और स्वामी की बातें महात्म्यभरी, बलभरी परावाणी बहती ही रहती.......चाहे सुनने वाला एक ही व्यक्ति क्यों न बैठा हो लेकिन वे बोलते ही रहे........बोलते ही रहे। बापा के मूलभूत सिद्धान्त संप, सुहृदभाव, एकता-भावात्मक एकता, दिव्य एकता में ले जाने निरंतर अनुरोध करते ही रहे, अपने देह की, दिन-रात की परवाह किए बिना ! कई बार हमने अपने मन, बुद्धि, चित्त, अहम् व अंतःकरण के दायरे में रहकर उस अजोड़ विभूति की बातों को नज़र अन्दाजा भी करा.......पर आज भी उनकी सौम्य मूर्ति, हरेक चैतन्य के विकास के लिए किया गया उनका अनहद् परिश्रम, मीठी परन्तु सचोट डाँट व उनके कहे शब्द निरंतर गूँजकर सतर्क करते रहते हैं-

- ☆ तुम्हारा जीव ब्रह्मरूप हुआ?
- ☆ तुम प्रभु की मूर्ति में रहते हुए?
- ☆ तुम्हारा स्त्री-पुरुष भाव गया?
- ☆ आप कौन हो ? आप किसके हो ? अपने मन के-मान्यता के-सत्य के ?
- ☆ मन का आभासमात्र भी हमें नहीं रहने देना है।
- ☆ तुम पाँच साधु एक हुए ?
- ☆ मन का राज्य छोड़कर गुरूराज्य में प्रवेश कर जाओ।
- ☆ दुनिया न माने, मानव न माने, तुम तो मानो।
- ☆ आज तक का सब माफ, अब नया प्रारब्ध खड़ा नहीं करना।
- ☆ अनुभव के बाद तो unconditional surrender करो।
- ☆ तुम्हारे मन का स्वरूप बदला?
- ☆ तुम्हारे बीजरूप संस्कार टले?
- ☆ तुम रोज सुबह उठकर भगवान को धन्यवाद-धन्यवाद देते हो?

उनकी ये सब बातें आज भी हमारे जड़तंत्र को चेतन करती हैं। ये बातें बताती हैं कि उनकी बस यही चाहना थी तुम प्रभु में रहते हो जाओ......वे तो हमें मिट्टी के भाव सोना देना चाहते थे.....अर्थात् हमारे हल्के स्वभाव, वृत्तियाँ लेकर बदले में 'प्रभु की मूर्ति' का सुख देना चाहते थे-पर हम ????

अभी भी उस करुणानिधि की नज़र सैकण्ड-सैकण्ड हमारी ओर ही है। सो अभी भी हम उनके परिश्रम को समझकर-दिल की सच्चाई से प्रायश्चित

भजन करें कि आप हमें जिस अभेददृष्टि, अविरोधदृष्टि व सर्वदेशीयता की Top भूमिका पर ले जाना चाहते थे, वह आपके अनुग्रह से ले जाना। आपके स्वरूप महिमा दूसरों को समझाने से पहले हम स्वयं समझे। आपका व आपके अल्प संबंध वालों का गुणगान कहते ही हमारे जीवन की पल पल बीतें।

एक बार दिल्ली में ही प.पू. काकाजी बोले थे कि **'अगर मैं चाहूँ तो यहाँ से मेरठ तक की line लगा दूँ......पर फिर मैं आप लोगों के हिस्से नहीं आऊँगा।** तो हमें तो पल-पल आनंद से रहने जैसा है कि अहो हो ! करुणा करके वे हमारे लिए साधारण बनकर रहे। अब तक केवल सुनते आये थे कि कृष्ण ने अर्जुन के लिए गरजु बनकर सारथी बनकर रथ चलाया, परन्तु अब तो खुद अनुभव करते हैं कि प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. साहेब, प.पू. गुरूजी हमें समझाने, मार्गदर्शन देने गरजु बनकर दिन-रात परिश्रम कर रहे हैं......

आईये ! हम सब इस परम पवित्र पर्व पर बालक बनकर पुकार करें-हे काकाजी! हमारा मन चंचल बन्दर जैसा है, लेकिन अब हम इसे गुरूचरणों में निमग्न रखने की एक आदत डाल लें। आप ही हमारे प्राणाधार चैतन्य आधार हो-आप सनातन नित्य सदा दिव्य साकार स्वरूप हो-हमारी भीतरी यात्रा पूरी करने आप हमारे हृदयाकाश में जहाँ धबक-धबक धबकार होती है वहाँ विराजमान हो ही-यह प्रतीति पूर्णरूप से कराने ही आपने हमारे बीच में से स्थूलरूप से छलाँग मारी है। जब तक आप स्थूलरूप से थे, तब तक हम हमारे आलस, लापरवाही में डूबे रहे.......हमें जागृत करने आपने यह कदम उठाया.....तो आपके बलिदान को समझें....**आप जो प.पू. गुरूजी के रूप में हमें अपनी ही अनमोल भेंट देकर गए हैं उसको सम्यक्‌रूप से पहचान कर सर्वस्व का समर्पण करें**-अपने मन के दायरे में रहकर उनके साथ वही गल्तियाँ repeat न करें।

आप खूब उदार दिल के थे, अभी भी आप प्रगट ही हो-तो हमारे अब तक के किए को माफ करना। आप हमारे रोज़ के गुनाहों का पन्ना तो फाड़ ही देते थे, पर अब नए प्रारब्ध खड़े न करें। आपके भक्तों के सुहृद बनकर भावात्मक एकता से जीने की कोशिश करें। हमारी चेतना को मायिक जड़तंत्र से लड़ने की शक्ति देना। आपको स्वामिनारायण धून्य खूब प्रिय थी....असल में तो आपकी धून्य के प्रताप से हम आज यहाँ उजले हैं। आज भी आपकी धून्य का ब्रह्मनाद कानों में गूंज कर कहता है.....भजन करो ! भजन करो ! आप जैसे समर्थ का संबंध होने के बाद झूठे बन्धन, झूठी महोब्बत, पराधीनता, प्रकृति की गुलामी, धन-कीर्ति, मान की लालसा का हमारे जीवन में स्तम्भ न हो बल्कि महिमा, स्वरूपनिष्ठा, सुहृदभाव हमारे जीवन का आधार बनें......एक दूसरे के अभाव, अमहिमा, टीका चर्चा में समय बरबाद न करें-यह अमूल्य मौका जाने न दें.....ऐसी दिव्यदृष्टि अनुग्रह करके हमारे देहध्यासी जड़तंत्र पर डालकर आत्मा में सच्चा ज्ञानदीप प्रगटा देना। बस ! धन्यवाद ! धन्यवाद ! की रटन ही 24 घंटे अंतर में लगी रहे- आपके ही शब्दों में 'भुल्का' बालक बनकर-'मम्मी-मम्मी' पुकार करें और अब जीने का पुराना ढ़ाँचा बदलें। आपने जो 'शुद्ध गुरू परम्परा' अर्थात् अक्षरपुरुषोत्तम को रखकर प्रगट की उपासना की सिद्धांतिक बातें करी हैं, आपके बताए उसी रास्ते पर चलकर जीवन जीयें। आपकी खूब इच्छा थी कि हम पाँच तो कम से कम मिलजुल कर रहें........ऐसा दिव्य उठाव-सर्वदेशीय एकता से मिलजुल कर हम लें....वहीं आपके प्रति सच्ची प्रीति कहलाए और वही हमने आप जैसी 'दिव्य माँ' का अमृतपर्व सही अर्थ में मनाया कहा जाएगा न ?

—आनंदी, दिल्ली

☆☆☆

धन्य-धन्य काकाजी.........

''प.पू. काकाजी का स्वरूप पहचानना खूब कठिन''—क्योंकि वे वतर्ते ही सामान्य मनुष्य जैसे थे। लेकिन उनका प्रेम ऐसा था जो अपने भी नहीं देते। प.पू. काकाजी ने मुझे प्यार, मेरी चिंता एक पिता की तरह की.......1985 दिसम्बर में जब आखिरी बार प.पू. काकाजी दिल्ली आए थे तो मुझे बोले थे **'तू मेरा अर्जुन है।'** मैं तो तब उनकी बात को यूं ही समझा था कि वे मुझे लाड़ लड़ाने, प्यार करने, ऐसा कह रहे हैं.....क्योंकि कृष्ण-अर्जुन के संबंध बारे मैं ज्यादा जानता नहीं था......हाँ, मैं तो बस इतना जानता हूँ कि उस समय मुझे धीरे-धीरे प.पू. काकाजी से दिल से लगाव जैसा होने लगा था.....और 1986 में जब प.पू. काकाजी के शरीर के छोड़ने का मुझे पता चला तो एकदम shock जैसा लगा......

प.पू. काकाजी की कही बात कई बार कानों में गूंजती है 'अनुभव होने के बाद तो संत के प्रति पूर्ण समर्पित (Total Surrender) हो जाओ........'। इससे भी अधिक, सालों पहले कही प.पू. काकाजी की 'अर्जुन वाली बात' का अनुभव उन्होंने मुझे 1991-92-93 में हर पल कराया। जैसे अर्जुन को युद्ध नहीं करना था, लेकिन श्री कृष्ण ने उसे निमित्त बनाकर युद्ध कराया; वैसे ही विपरीत परिस्थितियों में भी दिल्ली मंदिर के निर्माण कार्य के लिए पू. गुरूजी को मदद रूप होने में प.पू. काकाजी ने मुझे निमित्त बनाया.... मैं इसे मेरा बहुत सौभाग्य मानता हूँ। एक तो मेरे हुन्नर का इतने अच्छे काम में उपयोग हुआ और इसी कारण मैं प.पू. गुरूजी के ज्यादा करीब हो गया। यह सब सहज ही कराकर प.पू. काकाजी ने अपने स्वरूप की पहचान पू. गुरूजी के रूप में कराई......पू. गुरुजी हर पल मेरी वैसी ही चिंता करते हैं जैसे प.पू. काकाजी करते थे। बस! धन्यवाद! धन्यवाद! निकलता है कि कितना उपकार है प.पू. काकाजी का कि पू. गुरूजी जैसे निर्मल, पवित्र संत दिए जो हमेशा हमारे सुख-दुख के भागीदार रहते हैं और हम सुखी रहें यही कोशिश करते हैं। पू. गुरूजी के अनुसार behave करके प.पू. गुरूजी की प्रसन्नता पा सकें यही दिल से पू. काकाजी के अमृतपर्व पर प्रार्थना है।

-अनिल शर्मा, दिल्ली

☆☆☆

कैसे विसरूँ प्रेम तिहारा.....

हल्के-हल्के बालों से टपकता पानी, एक हाथ में लिए कुछ किताबें व नैपकिन-चश्मा, हाथ से धोती का किनारा पकड़े हुए मस्तीभरी चाल-अहा! वो मनमोहक छवि जिसकी स्मृति से आज भी आँखें भर आती हैं और तब मन व्याकुल हो उठता है प.पू. काकाजी के स्थूल दर्शन के लिए......

हकीकत में तो प.पू. काकाजी के अनुग्रह से ही मैं मंदिर से जुड़ी.......वर्ना शुरूआत में मुझे मंदिर जाने की तनिक भी रूचि नहीं थी, बल्कि खास मम्मी के कहने पर जबरदस्ती बेमन से मंदिर जाती थी। हाँ, वहाँ प.पू. काकाजी की बातें सुनने का मेरा मन जरूर करता था-बेशक इनकी कथावार्ता, इनकी ज्ञान की बातें मुझे समझ में नहीं आती थी......पर, उनका स्वरूप ऐसा था कि पहली बार में ही सामने वाला व्यक्ति आकर्षित हो जाता और मुझे भी ऐसा ही अनुभव हुआ। इसलिए सहज ही एक पंक्ति याद आती है जो श्रीकृष्ण के लिए कही जाती है-'आकर्षित इति कृष्णः' यूं प.पू. काकाजी का तो स्वरूप ही सभी का मन मोह लेता था.......एक तो प.पू. काकाजी स्वयं ही बहुत खुबसूरत थे और साथ ही प्रभु का तेज.....शब्दों में उस स्वरूप का वर्णन नहीं हो सकता.......और उस आकर्षित स्वरूप से मुझे कब अतिशय लगाव हो गया, पता ही नहीं चला।

भले छोटी-सी उम्र में मैं केवल दो वर्ष ही उनके

सम्पर्क में रही, पर इन दो वर्षों में उन्होंने जीवनभर की पूँजी मुझे दे दी। कितनी ही स्मृतियाँ- प.पू. काकाजी का मुझे 'बेबी' कह कर बुलाना जो शब्द आज भी आनंदित करता है। धून करते हुए अक्सर स्मृति होती है कि एक बार प.पू. काकाजी धून करवा रहे थे, तो मुझे ऐसा हुआ कि आँख खोलकर प.पू. काकाजी का धून करते हुए दर्शन करूँ। लेकिन तुरंत धून करते हुए प.पू. काकाजी ने आँखें खोली, दो-तीन बार अपनी पलकें मिचमिचाई और उंगली से अपनी आँखों को बंद कर मुझे ईशारा किया कि आँखें बंद करो। उस समय प.पू. काकाजी की आँखों में से जो प्रकाश निकला था उसका मैं वर्णन नहीं कर सकती।

प.पू. काकाजी के प्रति ऐसा अद्भुत खिंचाव कि जब वे दिल्ली आते थे तो उस समय school going child होने के कारण मुझे चिड़ आती थी कि प.पू. काकाजी आए हैं और उनकी अमृतवाणी व दर्शन का लाभ छोड़कर मुझे स्कूल जाना पड़ेगा और तो और studies का उस समय खूब भार लगता था। इसी संदर्भ में 6 दिसम्बर 1985 का वह दिन जिसे मैं कभी भूला नहीं पाऊँगी। स्थूल रूप से आखिर बार प.पू. काकाजी दिल्ली से 6 दिसम्बर 1985 की evening flight से गए थे। वह प.पू. काकाजी का दिल्ली का आखिरी trip था। Studies के कारण चूँकि थोड़ी बंदिश थी सो 6 दिसम्बर की सुबह मैंने प.पू. काकाजी के दर्शन किए थे। फिर प.पू. काकाजी सौ. मधु जीजी के घर चले गए-तब भी वहाँ दर्शन करने जाने की मेरी खूब इच्छा थी पर examination days नज़दीक थे सो जा नहीं सकती थी। सौं. मधु जीजी के घर से प.पू. काकाजी प.भ. आर.के.पटेल साहब के यहाँ गए और वहीं से Airport जाने वाले थे। तब भी मेरी वहाँ जाने की खूब इच्छा थी लेकिन hesitation के कारण parents को कह नहीं पाई कि मुझे जाना है। पर सच ! उस दिन खूब रोना आ रहा था और ऐसा लगता था कि मेरे भीतर से कुछ अलग हो रहा है..... कोई दूर जा रहा है...... और 6 दिसम्बर की सुबह के वे दर्शन आखिरी दर्शन ही बन गए क्योंकि 7 मार्च 1986 को प.पू. काकाजी ने स्थूल शरीर छोड़ दिया और दिल्ली आ नहीं पाए. जिसका मुझे खूब रंज भी हुआ लेकिन दूसरी ओर अपनी किस्मत पर नाज़ भी है कि प.पू. काकाजी के स्थूलरूप से होने पर ही मैं सत्संग में, उनके सम्पर्क आ गई थी!

और........मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण, अद्भुत आश्चर्य तो यह है कि प.पू. काकाजी ने मेरे बारे प.पू. गुरूजी को पहले ही कह दिया था कि 'इंजीनियर के यहाँ लड़की अपनी है।' सच ! कैसे पारदर्शक पुरुष थे-प.पू. काकाजी कि के पहले से ही मेरा उन्होंने forecast कर दिया.....यह मेरा परम सौभाग्य कि छोटी-सी आयु में ही मैं उनकी दृष्टि में आ गई और उन्हीं के संकल्प के फलस्वरूप आज मैं भगवान भजने के रास्ते पर अग्रसर हुई हूँ। इससे भी अधिक कोटि धन्यवाद हैं प.पू. काकाजी को जो मुझे भगवान भजने के रास्ते पर चलने के लिए प.पू. गुरुजी जैसे समर्थ, पवित्र संत की सेरेछाया और 'दिव्य माँ'-पू. आनंदी दीदी की गोद में बिठा दिया। वर्ना आज का युग देखकर ऐसा होता है कि प.पू. काकाजी न मिले होते, प.पू. गुरूजी व पू. आनंदी दीदी की guidence न मिली होती तो जगत के किन जंजालों में फंस जाती और जो सुख आज मिल रहा है वह तो कल्पना की ही बात बन जाती।

प.पू. काकाजी के संकल्प से इस मार्ग को पाए- वर्ना अपने में क्या बरकत ? सच ! बक्षीश में उच्च कोटि का जीवन प.पू. काकाजी ने प्रदान कर दिया......स्वयं ने हमें 'अपना' माना। आज जब उन्हीं का अमृतपर्व वर्ष चल रहा है तो यही प्रार्थना कि उन्होंने अपना माना ही, पर अपने वर्तने से ऐसा दर्शाए कि 'सच में हम प.पू. काकाजी के हैं।' प.पू. काकाजी की स्मृतियाँ तो करनी हैं ही, लेकिन

वे जो कराना चाहते हैं वह कर पाए वही प.पू. काकाजी की असली स्मृति करी मानी जाए। सो, अब तो उनके बताए रास्ते, आदर्शों पर चलें ऐसा बुद्धियोग प्रभु दें ऐसी प्रार्थना !

–बंसरी, दिल्ली

☆ ☆ ☆

H.D. Brahm-Swaroop KAKAJI MAHARAJ- As I saw him

I am one of the graced persons, having, had an opportunity to have the 'Sakshat Darshan' of Kakaji Maharaj only once & that has inspired me to follow the 'Swaminarayan Faith'. The incident is small, but memorable and may perhaps help many to have unshaken faith in 'Avtar Purush'. On the occasion of 'Amrit parva', I take this opportunity to share the same with others.

The activities of 'Yogi Divine society' in Delhi were hardly known to me upto the year 1985, except that in the official capacity I was discharging my duties is process the land allotment to the society at Ashok Vihar. I had the opoortunity to talk to P.P. Guruji, 3-4 times on the subject matter, who used to often visit my place. During my discussion with him, 'Guruji' made a mention of P.P. Kakaji & asked me to come for His Darshan when He is in delhi next. I agreed & one fine morning P.P. Guruji telephoned me and sent a car to fetch me as 'Kakaji' had come. I hopefully went to Ashok Vihar mandir & had Sakshat Darshan of him.

No sooner, I settled myself in this gracious presence he asked me, 'why are you worried of your brother & his wife who are hospitalised? They will recover soon, and no harm would take place to them, only you have to remember your God. I was amazed to hear from Him of my problem and solution to it, for the reason, that then even P.P. Guruji did not know of it & how He could see it. Today I must admit that my cousin brother & his wife, who were grappling for life in the hospital after a serious car accident are very physically with their family.

The instance may look to be small; but shows that now an 'Avtar Purush' can be a visionary & perhaps it will not be a hyperabole if I equqate Him with 'Lord Krishna' Who knew what is going to happen next in 'Mahabharta'.

It is through his vision and ardent 'Guru Bhakti' that the centre is established at Delhi, under the guidance of His beloved disciple P.P. Guruji & has proved to be a constant source of guidance for all alike.

I see P.P. Kakaji and 'apostle' of Gurubhakti for the whole Gunatit Samaj & a constant force of our moral and social upliftment. I do not believe that he is not with us today-rather as he used to say, He will be always at our door steps, whenever we call him with our heart and soul. Now that He is no more physically with us, we may not have to wait for His coming to Delhi from Bombay, or outside His room after relaxation. He is always with us at our call.

We shall be going our own good spritially morally and socially, if we are able follow even His one way of life i.e. 'Sampoorna Samarpan and transparency to Guru'.

-N.K. Aggarwal, Delhi

☆ ☆ ☆

प्रेम की मूर्ति.......प.पू. काकाजी

मेरे जीवन में खुशियाँ ही खुशियाँ भरने की शुभ घड़ी- 84 फरवरी में जब मैंने पहली बार प.पू. काकाजी का दर्शन करा...... तब मैं अपनी कुछ निजी परेशानियों से खूब परेशान थी और इस बारे

में पहले पू. गुरूजी से बात करी थी तो उन्होंने कहलवाया कि प.पू. काकाजी आ रहे हैं, उनसे बात करना......दो दिन बाद प.पू. काकाजी आए तो दिल्ली मंडल उन्हें लेने एयर-पोर्ट गया। तब मैं भी गई थी। वहाँ पर मैंने दूर से देखा तो पू.गुरूजी दंडवत् कर रहे थे। तो मैंने सोचा कि उनमें ऐसा क्या है जो सभी इस तरह प्रणाम कर रहे हैं, क्योंकि उस समय यह पता नहीं था कि प.पू. काकाजी क्या विभूति हैं? प.पू. काकाजी व हम सभी अशोक विहार मंदिर आए। तब मेरे बारे में पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी को थोड़ी बात करी। मुझे तुरंत प.पू. काकाजी ने बुलवाया जबकि उन्होंने कुछ पानी इत्यादि तक नहीं पिया था। मुझे अपने सामने कुर्सी पर बहुत प्रेम से बिठाया.....मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी कि कैसे बताऊँ और समीप से दर्शन करते ही मैं रो पड़ी। मैं कुछ कहती इससे पहले प.पू. काकाजी ने मुझे कहना शुरु करा कि 'तुम्हारा Husband कल शाम तक तुम्हें ले जाएगा' और दूसरे दिन ऐसा ही हुआ......तब से मुझे लगने लगा कि प.पू. काकाजी कोई साधारण पुरुष नहीं है।

प.पू. काकाजी के बारे में जितना कहा जाए उतना ही कम है। प.पू. काकाजी ने मेरी निजी समस्या को ऐसे सुलझाया जैसे एक पिता अपनी बेटी की चिंता करके उसे सुलझाता है। हृदय को मोह लें-ऐसे थे प.पू. काकाजी। प.पू. काकाजी अंतर्यामी पुरुष थे। वैसे तो दिखने में वे समझ आए ऐसे नहीं थे, लेकिन सच में वे प्रभु की मूर्ति ही थे। प.पू. काकाजी के ऐसे अनेक अनुभव हैं, जो मैंने महसूस किए।

5 दिसम्बर 85 की रात 12 बजे मैं और मेरे Husband अनिलजी प.पू. काकाजी को मिलने गये थे। उन दिनों मैं कुछ दुविधा में थी, लेकिन मैं प.पू. काकाजी कह नहीं पा रही थी कि सामने से प.पू. काकाजी स्वयं बोले-''**आज तक तुम मंदिरों में जाकर देवी-देवताओं के आगे सिर झुकाती थी, इसी आशा पर कि कभी तो वे सुनेंगे। मैं तेरे सामने बैठा यह कहता हूँ कि तेरा आज तक सब कुछ अच्छा हुआ है, तो आगे भी अच्छा ही होगा। फिर भी तुम्हें भरोसा नहीं है।**'' सच ! प.पू. काकाजी ने मुझे सुखी करने के लिए अपना आराम, तकलीफ कुछ भी नहीं देखा....

और........प.पू. काकाजी का एक सजीव आशीर्वाद हमें बेटे के रूप में दिव्यांग मिला है। इस बारे में प.पू. काकाजी ने पू. गुरूजी को अमेरिका से लिख भेजा था कि ''**मैं अनिल के घर यहाँ से एक मुक्त भेज रहा हूँ। उसका नाम दिव्यांग रखना।**'' और......उसके features भी वैसे ही हैं। इससे भी अधिक दिव्यांग का भी प.पू. काकाजी के प्रति लगाव देखते ही बनता है जबकि उसने स्थूलरूप में प.पू. काकाजी के दर्शन नहीं करे.........

प.पू. काकाजी के हम खूब ऋणी हैं कि आज पू. गुरुजी के रूप में वे वैसा का वैसा सुख हमें दे रहे हैं और.........इस बारे प.पू. काकाजी ने पहले से ही indication दे दिया था।

प.पू. काकाजी Dec. 1985 में Last बार Punjab tour पर गए.....तब लुधियाना में प.भ. गुरुबक्शजी के यहाँ अचानक बोले कि '**अब मैं पंजाब नहीं आऊंगा, जिसे मुझे मिलना हो वह अब दिल्ली आना......**' उस समय हम प.पू. काकाजी की भाषा समझ नहीं पाए। पर जिसे समझना हो उसके लिए तो उनका ईशारा था न कि मैं अब गुरूजी में रहकर कार्य करूँगा।

फिर प.पू. काकाजी की एक Audio Cassette में भी अभी-अभी मैंने सुना था जिसमें प.पू. काकाजी दिल्ली में बोले थे ''**मैं सच्चा हीरा आपको बता दूँगा। मैं उसका आध्यात्मिक झवेरी हूँ**.......और एक दूसरी cassette में प.पू. काकाजी बोले हैं '**देखो ! यह मुकुंद........मेरा आध्यात्मिक कोहिनूर हीरा है !**' इससे अधिक प्रमाण की क्या आवश्यकता है ?

इससे अधिक प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी के

मुख से भी हमने कई बार सुना है कि **'गुरूजी ने पू. काकाजी अखंड रखे हैं....पू. काकाजी जैसा ही सुख पू. गुरूजी से तुम्हें मिलेगा......'** प.पू. पप्पाजी हमेशा कहते हैं कि पू. गुरूजी, पू. दिनकरभाई व ताड़देव के भाईयों में रहकर पू. काकाजी कार्य करते हैं......27 अक्टूबर 1992 को दिल्ली में ही भईया-दूज के दिन सभा में प.पू. पप्पाजी बोले थे.......**'8 मार्च 1986 की शाम को जब प.पू. काकाजी की अग्निसंस्कार विधि हो रही थी तब प.पू. काकाजी को पू. गुरूजी में प्रवेश करते मैंने देखा.......'** और सच में कईयों को पू. गुरूजी में प.पू. काकाजी का दर्शन होता है........पर यदि इतने अनुभव होने के बाद भी हम अपने मन, बुद्धि, चित्त के दायरों में रहकर इधर-उधर भटकते रहकर अन्य सहारे ढूँढत रहे व प.पू. काकाजी किसकी गोद में बिठाकर गए हैं उस प्राप्ति के आनंद में ना रहे......तो वह हमारी कैसी कमनसीबी? पू. गुरूजी का भरोसा ना रखकर अपने मन-बुद्धि के मूल्यांकनों का आधार पकड़े रखें.......हम ही उन्हें न समझ पाए तो हमसे अधिक जड़ कौन ?

प.पू. काकाजी की एक बात मुझे कभी नहीं भूलती है कि प.पू. काकाजी अपने प्रवचन में हमेशा कहा करते थे-**''जो मुकुंद को राजी करेगा, उसे मुझे राजी करने की आवश्यकता नहीं है। वो मेरा सच्चा वारिस हैं।''** यह बात सत्य है-जो आज हम सबके सामने है। प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरूजी के रूप में जो अनमोल हीरा हमें दिया है उसे हम संजो कर रख पाए। जो त्रुटियाँ प.पू. काकाजी के साथ हम सब ने करी है, वे हम पू. गुरूजी के साथ न दोहराएं यही प.पू. काकाजी के अमृतपर्व पर अंतर से प्रार्थना है।

–निशि शर्मा, दिल्ली

☆ ☆ ☆

पारदर्शक पुरुष.......प.पू. काकाजी

1983 में एक बार पंजाब जाने हम प.पू. कााजी के साथ दिल्ली मंदिर से सुबह निकलकर लगभग साढ़े-ग्यारह बजे कुरुक्षेत्र फार्मेसी पहुँचे। वहाँ पू. काकाजी ने फार्मेसी का काम-काज देखा-करा और हम 'कलश्या हाऊस' में खाना खाने गए। खाना खाकर पू. काकाजी ने मुझे बुलाया और पूछा-किशोर, हमारी गाड़ी बराबर है न? मैंने कहा-काकाजी गाड़ी मैंने कल ही सर्विस कराई है। तो बोले-अच्छा, लेकिन तू ऐसा कर कि मैं तीन बजे तक आराम करता हूँ तब तक में गाड़ी चैक कराकर ले आ। मैंने कहा-काकाजी, मैंने गाड़ी कल ही चैक करवा ली है, कोई जरूरत नहीं। तब थोड़ी देर इधर-उधर की दूसरी और बातें करी, फिर दोबारा बोले कि-लेकिन तू गाड़ी तो चैक करा के लाना। मुझे हुआ कि काकाजी ने दोबारा कहा है तो गाड़ी चैक करा कर ही ले आऊँ। सो पू. राजूभाई को कह कर मैं गाड़ी चैक कराने एक सरदारजी के पास गया। मैंने कहा सरदारजी ! मुझे मेरे गुरूजी को लेकर लुधियाना जाना है, तो यह गाड़ी चैक करानी है। तो उसने कहा-भाई यहाँ तो गाड़ियाँ पहले ही बुक हुई हैं, सो-टाइम नहीं। मैंने कहा-भाई, गाड़ी की सर्विस तो मैंने करा ली है, सिर्फ हमारे गुरूजी ने कहा है कि गाड़ी चैक करा के लाओ और हमें 3 बजे जाना है इसलिए आपको इतना तो करना ही पड़ेगा। तब उन्होंने पूछा-कौन गुरूजी हैं? कहाँ हैं? किस सम्प्रदाय के हैं वगैरे। मैंने उसे थोड़ा समझाया-करा तो सरदारजी ने गाड़ी चलाकर देखी और कहा कि गाड़ी O.K. है। मैंने कहा हमारे गुरुजी बोले थे कि ऑयल, पानी, टायर, ब्रेक-वेक बराबर देखना और आपने ब्रेक तो चैक करी नहीं, वह देख लो। उसने कहा भाई, ब्रेक-ऑयल, सब बराबर है

और ब्रेक भी बराबर लगती है। मैंने फिर विनती करी-गाड़ी को एक बार सर्विस स्टेशन पर चढ़ा कर नीचे से चैक तो कर दो। सरदारजी थोड़ा चिढ़ जैसे गए जरूर, परन्तु आखिर उसने गाड़ी सर्विस स्टेशन पर चढ़ा कर देखा तो ब्रेक तार की लॉकपीन निकल गई थी, जिससे बोल्टपीन का नौब खुल गया था। वह देख, सरदाजी एकदम बोले-कि बराबर, तुम्हारा गुरुजी गुरुजी है। और फिर वह repair करा के तीन बजे से पहले मैं वापिस पहुँच गया-ऐसे पारदर्शी पुरुष थे पू. काकाजी!

ऐसे ही एक दूसरा प्रसंग-

पू. उत्तमस्वामी लुधियाना रहने गए थे। मैं और अश्विन (बाबाभाई) हम दो जने छत्तरपुर रहते थे। इस दरम्यान एक बार पू. काकाजी दिल्ली आए थे। तब बम्बई वापिस जाते हुए उन्होंने पूछा-किशोर, तुम्हारे पास खर्चे के पैसे हैं? हमारे पास लगभग 220 रूपये थे। मैंने हिसाब वगैरा बताकर कहा, 220 जितने हैं। तो बोले बराबर। फिर, नागपाल बाबा क्या करते हैं-वगैरा थोड़ी इधर-उधर की बातें करी और पू. काकाजी अशोकविहार जाने निकले। गाड़ी में बैठते हुए बोले-'मैं बम्बई जाकर 1500 रूपये भेज दूँगा, ठीक है न ? महिने का खर्च हो जाएगा। दो-तीन दिन में भेज दूँगा। मैंने कहा-'अच्छा'।

फिर, तीन दिन हुए-चार दिन हुए-आठ दिन हुए। नौवे दिन तो मेरे पास पौन दो रूपये ही रहे। मैंने बाबा को कहा.......बाबा, अब तो दो रूपये ही balance है। कल सुबह गुरुजी को फोन करें कि पू. काकाजी तो यूं कह कर गए थे, पर कुछ भेजा नहीं। क्या करें ? बाबा बोला-हाँ, सुबह फोन करना। यूँ बातें करके भजन वगैरा करके सो गए। सुबह उठे और पूजा आरती वगैरा करके फोन के लिए गांव में जाने निकलना ही था कि इतने में 9 बजे लगभग 12 से 15 जने मंदिर आये और बोले कि-हमारे लड़कों के बाल उतरवाने हैं-तीन लड़के हैं। पंडितजी कहाँ हैं? बाबा मेरे पास रसोई में आया और बोला-किशोर, ऐसी-ऐसी बात है, तो क्या करना है? मैंने कहा-करना क्या? हम ही पंडित के पंडित। चल, पुष्पांजलि वगैरा करा कर विधि करवा देते हैं। फिर मैंने धोती पहन कर पुष्पांजलि, धून, श्लोक वगैरे बोले कर बाल उतरवाने की विधि करवा दी। सब खूब खुश हो गए कि इतनी अच्छी विधि तो कहीं किसी ने कहीं नहीं कराई और लगभग पौने दो हजार रूपये सेवा में रखकर गए ! इसके लगभग तीन दिन बाद प.पू. काकाजी का कागज़ आया, कि-मैं तुम्हें पैसे भेजने के लिए कह कर गया था, लेकिन भेज नहीं पाया। फिर भी तुमको तकलीफ तो, हुई नहीं होगी। हमारी नाव बीच दरिया में चलती हो, तो चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देता हैं, कहीं किनारा दिखाई नहीं दे। इस तरह सब कुछ भगवान का सर्वोपरि कर्तापन मानकर जीन लग जाओ। हमारा शुद्धिकरण हो जाएगा। हमारे पास प.पू. बापा को यही कराना है। विचार तो आये, लेकिन सेवा, भजन के बल से शांति हो जाए। हमें ही हमारा गुरू बनना है।'

महाराज का ऐसा सर्वोपरि कर्तापन हर पल मानते हो जाएँ और फलस्वरूप निरंतर हल्का फूल रहकर उनके कार्य में निमित्त बनकर सेवा-भक्ति करते रहकर जीवन को धन्य करके-प.पू. काकाजी को 'हाश' करें ऐसा बुद्धियोग वे ही दें ऐसी उनके अमृतपर्व पर उनके चरणों में याचना।

—निष्काम, दिल्ली

☆ ☆ ☆

-: नम्रविनती :-

आप अमृतपर्व पर दिल्ली आ रहे हैं.........न ?

(1) बहनें व भाईयों दोनों अपना सामान अलग-अलग लाएँ।

(2) अपने Bags पर अपने नाम का लेबल व पता अवश्य लिखें।

(3) Room बंद करने का ताला - चाबी साथ में लें।

(4) कपड़ों पर वाटरप्रूफ स्याही से नाम लिखें।

(5) सर्दी खूब पड़ रही है, सो अपना स्वेटर, शाल, गरम कपड़े, जुराबें, मफलर कृपया साथ में लाएँ।

(6) रात को ओढ़ने के लिए अपना कम्बल-रजाई लेते आएँ।

(7) दैनिक जीवन की जरूरत की वस्तुएँ तौलिया, ब्रश, कंघी आपकी जरूरी दवाइयाँ आदि लेकर आए तो सुविधा रहेगी।

(8) छोटे बच्चों की जरूरत की वस्तु (प्लास्टिक, दूध की बोतल) इत्यादि साथ लाएँ।

(9) जहाँ पर आपके रहने की व्यवस्था की हो, कृपया सभी उसमें अपना सहयोग दें.......यह पर्व हमारा अपना है सो हरेक को मददरूप होकर भक्ति अदा करके आनंद करना है।

व्रतोत्सवसूची

1- दि. 27-1-94	गुरुवार	पूर्णिमा मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का दीक्षा दिन
2- दि. 3-2-94	गुरुवार	दिल्ली मंदिर में भगवान स्वामिनारायण व गुणातीत स्वरूपों की मूर्तिप्रतिष्ठा ब्र.स्व.परम पूज्य काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन व अमृतपर्व उत्सव
3-दि. 6-2-94	रविवार	एकादशी, व्रत ब्र.स्व. योगीजी महाराज का अंतर्धान दिन
4-दि. 15-2-94	मंगलवार	वसंत पंचमी ब्र.स्व. शास्त्री महाराज का प्रागट्य दिन शिक्षापत्री जयंती प्र.ब्र.स्व.परम पूज्य अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्म जयंती
5- दि. 22-2-94	मंगलवार	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
'Anirdesh', Ashok Vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane
Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : Mehta Printers, Delhi-110052 Phone : 7220332